Department of Prakrit and Sanskrit
Jain Vishva Bharati institute, ladnun

विश्रुत संस्कृतं पाठ्यक्रम
(One Year Online Diploma Programme in Sanskrit Studies)
Syllabus

पाठ्यक्रम परिचय:

'संस्कृत अध्ययन' में डिप्लोमा एक वर्षीय कार्यक्रम है (सामान्यतः दो सेमेस्टर), जो संस्कृत भाषा, व्याकरण तथा साहित्य में आधारभूत प्रवीणता प्रदान करने पर केन्द्रित है। यह पाठ्यक्रम जैन विश्व भारती संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा संचालित किया जाता है।

'संस्कृत अध्ययन' में डिप्लोमा नामक इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा की मूलभूत संरचना तथा विभिन्न ग्रंथों के चयनित अंशों के अध्ययन से परिचित कराना है। यह पाठ्यक्रम प्राचीन आचार्यों द्वारा समय-समय पर रचित संस्कृत साहित्य की अमूल्य धरोहर को दिशेष रूप से उजागर करता है

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राचीन भारतीय ज्ञान) परम्परा-Ancient Indian Knowledge Systems) का ज्ञान प्राप्त करेंगे तथा संस्कृत भाषा एवं साहित्य की विभिन्न अवधारणाओं एवं विचारों से परिचित होंगे। विद्यार्थी दोनों सेमेस्टरों में विभिन्न मॉड्यूल्स का अध्ययन करेंगे।

मुख्य विशेषताएँ:

- यह पाठ्यक्रम नियमित रूप से ऑनलाइन माध्यम से होगा।
- कक्षाएं Zoom app पर या Google Meet app पर आयोजित की जाएगी।
- अवधि :1 वर्ष (2 सेमेस्टर, जुलाई से नवम्बर तथा जनवरी से मई) ।
- सीटें उपलब्धता के अनुसार।
- योग्यता किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड विश्वविद्यालय से किसी भी विषय में/10+2 अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण ।
- शिक्षण पद्धति ऑनलाइन मोड़।
- शिक्षण का माध्यम संस्कृत और हिंदी रहेगा।
- 6 माही प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम के लिए प्रथम सेमेस्टर का पाठ्यक्रम पठनीय होगा

मूल्यांकन प्रणाली:

- परीक्षा पद्धति: ऑनलाइन माध्यम
- परीक्षा लिखित :– 70 अंक
- सतत आन्तरिक मूल्यांकन (CIA) : 30 अंक
- **असाइनमेंट लिखित :**
- **Class Test ऑनलाइन : (प्रवेश के दो माह बाद)**
- **सेमिनार एवं समूह चर्चा : ऑनलाइन :**
- **उपस्थिति ऑनलाइन :**
- **Assignment**

Semester- I

DSKT 101 : संस्कृत व्याकरण ज्ञान

Max Marks: 100 (70+30)

UNIT-1 : **स्वरसन्धि** (यण्, गुण, वृद्धि, दीर्घ, पूर्वरूप, पररूप)

व्यञ्जनसन्धि (जश्त्व, श्चुत्व, चर्त्व, ष्टुत्व, छत्व, परसवर्ण, अनुस्वार)

विसर्गसन्धि (उत्व, रुत्व, सत्व, षत्व, विसर्ग का लोप)

अयादी सन्धि

UNIT-2 : **समास** (अव्ययीभाव, तत्पुरुष, कर्मधाराय, द्विगु, द्वन्द्व, बहुव्रीहि)

UNIT-3 : पूर्वकालिक क्रियार्थक प्रत्यय(क्त्वा, तुमुन्, ल्यप्), क्रियार्थक कृत्प्रत्यय,क्तवतु), सातत्यबोधक प्रत्यय (शतृ, शानच्), स्त्री प्रत्यय (टाप्, ङीप्)

UNIT-4 :विभक्ति ज्ञान एवं कारकों के विशिष्ट प्रयोग

पाठ्य पुस्तकें-

१. संस्कृत वाक्य रचना बोध - आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं

२. रचनानुवाद कौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,२०२४.

३. बृहदनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल, मोतीलाल-बनारसीदास, मुम्बई, १९६२.

४. सरल संस्कृत व्याकरण, आचार्य बाबूलाल मीना, हंसा प्रकाशन, जयपुर, २०१२.

DSKT 102 : संस्कृत व्यवहारज्ञान

Max Marks: 100 (70+30)

UNIT-1 : धातु एवं धातुरूपों के प्रयोग, प्रमुख धातुरूपों का अभ्यास

UNIT-2 :नाम एवं सर्वनाम पदों के साथ धातुरूपों के प्रयोग, शब्दरूपों का अभ्यास

UNIT-3 :संस्कृत वाक्यों में कर्म का प्रयोग, अकर्मक-सकर्मक धातुओं का ज्ञान

UNIT-4 :संस्कृत वाक्यों में अन्य कारोकों का प्रयोग (तृतीया से सप्तमी विभक्ति तक)

पाठ्य पुस्तकें-

१. संस्कृत वाक्य रचना बोध - आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती, लाडनूं

२. सम्भाषणम्- प्रथम दीक्षा, प्र. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई-दिल्ली।

३. संस्कृतं वदतु, प्र. संस्कृत भारती, नई-दिल्ली।

४. सम्भाषणसोपानम्, जनार्दन हेगडे, प्र. संस्कृत भारती, वेङ्गलूरु।

५. संस्कृत व्यवहार साहस्री, प्र. संस्कृत भारती, वेङ्गलूरु।

DSKT 103 : जैनकाव्यसाहित्य

Max Marks: 100 (70+30)

UNIT-1 : **रत्नपालचरितम्** (प्रथम सर्ग)

UNIT-2 : **अश्रुवीणा** (श्लोक 1 से 30 तक)

UNIT-3 : **रत्नपालचरितम्** (द्वितीय सर्ग)

UNIT-4 : **सम्बोधि** (1 से 5 अध्याय)

पाठ्य पुस्तकें-

१. अश्रुवीणा, आचार्य महाप्रज्ञ, सं.डा. हरिशङ्कर पाण्डेय
२. रत्नपालचरितम्, आचार्य महाप्रज्ञ, प्र.जैन विश्वभारती, लाडनूं।
३. सम्बोधि, आचार्य महाप्रज्ञ, प्र.जैन विश्वभारती, लाडनूं।

1. DSKT 104 : सुभाषित वाङ्मय एवं स्तोत्र साहित्य

Max Marks: 100 (70+30)

UNIT-1 : नीतिशतक - भर्तृहरि (प्रथम ४० श्लोक)

UNIT-2 : भक्तामर स्तोत्र

UNIT-3 : वीतराग स्तोत्र

UNIT-4: कल्याण मन्दिर स्तोत्र

पाठ्य पुस्तकें-

१. नीतिशतक, भर्तृहरि, चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।
२. भक्तामर स्तोत्र, सं. डा. हरिशंकर पाण्डेय, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी।
३. वीतरग स्तोत्र, प्र. श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभण्डार, अहमदावाद, गुजरात।
४. कल्याण-मन्दिर स्तोत्र, प्र. सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा।

Semester- II

DSKT 201 : जैन संस्कृत -प्राकृत साहित्य

Max Marks: 100 (70+30)

UNIT-1 : **तत्त्वार्थसूत्र- (**प्रथम अध्याय)

UNIT-2 : **उत्तराध्ययन सूत्र-** प्रथम अध्ययन

UNIT-3 : **समणसुत्तं -** प्रथम खंड (मंगलाचरण एवं जिनशासन सूत्र)

UNIT-4 : **दशवैकालिक-**प्रथम और चतुर्थ अध्ययन

पाठ्य पुस्तकें-

१. तत्त्वार्थसूत्र, उमास्वाती, सं.डा. सुदीप जैन, पारस प्रकाशन, दिल्ली।

२. दशवैकालिक, सं.आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं।

३. उत्तराध्ययन सूत्र, सं.आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्वभारती, लाडनूं।

DSKT 202 : धर्म, दर्शन एवं पुराण वाङ्मय

Max Marks: 100 (70+30)

UNIT-1 : जैन सिद्धान्तदीपिका (प्रथम और द्वितीय प्रकाश)

UNIT-2 : अचारांग सूत्र-प्रथम अध्ययन (दो उद्देसक)

UNIT-3 : पद्म पुराण - रविषेण (प्रथम अध्याय)

UNIT-4 : षड्दर्शन समुच्चय (1-75 पृष्ठ टीका सहित)

पाठ्य पुस्तकें-

1. जैन सिद्धान्तदीपिका — हिन्दी व्याख्यासहित संस्करण, जैन विश्व भारती भारतीय ज्ञानपीठ। /
2. आचारांग सूत्र — सम्पादक मुनि तुलसी / मुनि नथमल :, जैन विश्व भारती, लाडनूँ।
3. पद्मपुराण — आचार्य रविषेण, सम्पादित संस्करण, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
4. षड्दर्शन समुच्चय — हिन्दी टीका सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरीज।
5. जैन दर्शन — पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी।
6. जैन आगम साहित्य का इतिहास — भारतीय ज्ञानपीठ।
7. भारतीय दर्शन — एम्. हिरियन्ना

DSKT 203: काव्यशास्त्रीय अध्ययन

Credits: 4 | Max Marks: 100 (70+30)

UNIT-1 : काव्य का लक्षण, हेतु एवं प्रयोजन

UNIT-2 : काव्य के प्रमुख तत्त्व(रस, रीति, गुण, अलंकार, वक्रोक्ति, औचित्य, ध्वनि)

UNIT-3 : छन्दो ज्ञान (प्रमुख छन्द-अनुष्टुप, शिखरनी, इंद्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा,शार्दुल्विक्रिदितम शार्दुलविक्रीदडतं, वसन्ततिलका, मालिनी)

UNIT-4 : शब्दालंकार एवं प्रमुख अर्थालंकार

पाठ्य पुस्तकें-

१. साहित्यदर्पण, श्री विश्वनाथ कविराज, सं. शालिग्राम शास्त्री, मोतीलाल वनारसीदास, मुम्बई।
२. वृत्तरत्नाकर, सं.आचार्य मधुसूदन शास्त्री, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
३. काव्यदीपिका, श्री कान्तिचन्द्र भट्टाचार्य, संपा. भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
४. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, सं.पी.वी.काणे, मोतीलाल वनारसीदास, मुम्बई।
५. अलंकार साहित्य की परम्परा, राजवंश सहाय "हीरा", प्रकाशक-भारतीय साहित्य मंदिर, दिल्ली

DSKT 204 : संस्कृत रचनात्मक लेखन

Credits: 4 | Max Marks: 100 (70+30)

UNIT-1 : वाक्यरचना (5 लकारों में)

UNIT-2 : पत्रलेखन (8 प्रकार के)

UNIT-3 : निबन्धलेखन (दीपावली, अहिंसा, प्रिय अध्यापक, आचार्य तुलसी, प्रिय पुस्तक, भारत देश, आचार्य महाश्रमण, महात्मा गाँधी)

UNIT-4 : अपठित गद्यांशों का अभ्यास (8 प्रकार के)

पाठ्य पुस्तकें-

१. प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी, डा. कपिलदेव द्विवेदी,
२. व्याकरण निबन्ध सौरभम्, डा. अर्कनाथ चौधुरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर।
३. संस्कृत निबन्धम् एवं पत्र-लेखनम्, रॉय-पब्लिकेशन, दिल्ली।
४. बृहद अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, नईं दिल्ली